# IMPACT OF THE FRENCH REVOLUTION

FOR:U.G.PART-2,PAPER-4
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

# पृष्ठभूमि

यूरोप में फ्रांस ही वह देश है जिसने क्रांति के माध्यम से पुरातन व्यवस्था के पतन को सुनिश्चित किया । फ्रांसीसी क्रांति कोई स्थानीय घटना नहीं थी ।इसने फ्रांस की जनता को ही नहीं बल्कि यूरोप और सारे विश्व की जनता को प्रभावित किया

# पृष्ठभूमि

जर्मन दार्शनिक ***कांट*** ने इसे विवेक की विजय का कहा ।***हीगल*** जैसे विचारक क्रांति की याद में पौधे लगाए। वही अंग्रेजी कवि ***वर्ड्सवर्थ*** ने अभिभूत होकर अपने युवा एवं फ्रांसीसी ना होने का खेद प्रकट किया।

# पृष्ठभूमि

फ्रांसीसी क्रांति के नारे ***स्वतंत्रता समानता तथा बंधुत्व*** का प्रसार न केवल यूरोप में बल्कि पूरे विश्व में हुआ ।
फ्रांसीसी क्रांति ने एक तरफ जहां राष्ट्रवाद एवं जनतंत्र वाद जैसी नई शक्तियों को पनपने का मौका दिया तो दूसरी और इसने आधुनिक तानाशाही तथा सैनिक वाद की नींव डाली।

# पृष्ठभूमि

फ्रांसीसी क्रांति के संदर्भ में ***डेविड थॉमसन*** ने '***यूरोप सिंस नेपोलियन***'में लिखा है कि फ्रांसीसी क्रांति 1914 ईस्वी तक आधुनिक यूरोपीय जीवन की अत्यधिक महत्वपूर्ण घटना स्वीकार की जा सकती है ।परिणामों की दृष्टि से इसकी तुलना 16वीं सदी के धर्म सुधार आंदोलन

# पृष्ठभूमि

तथा 17 वी सदी के धार्मिक युद्ध से की जा सकती है।

***जे हॉलैंड रोज*** का विचार है कि -यह क्रांति विचार ,समाज और राजनीति के क्षेत्र में एक ऐसी विजय है जो अव्यवस्था, विशेषाधिकार तथा निरंकुश शासन से युक्त पुरातन व्यवस्था को पार कर गई थी।

# पुरातन व्यवस्था का अंत

- क्रांति पूर्व सामंत लोग अपनी विशेष स्थिति के बलबूते पर कृषक एवं मध्यम वर्ग का शोषण करते थे।फ्रांस की राज्यक्रांति ने कुछ व्यक्तियों के विशेष अधिकारों का अंत कर जन सामान्य को राहत पहुंचायी। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अपनी विशिष्ट सामाजिक स्थिति कायम नहीं रख सके

# किसानों की दशा में परिवर्तन

फ्रांस की क्रांति ने कृषि  दासता एवं उससे जुड़ी निरंकुशता का अंत किया। किसानों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता  प्राप्त हुई जिनका किसानों ने कभी स्वप्न भी न देखा था। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांस कुछ ही वर्षों में सुखी कृषकों का देश बन गया ।इसने अन्य यूरोपीय देशो को भी प्रेरित किया।

# लोकतंत्र का प्रसार

फ्रांसीसी क्रांति ने लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार किया। क्रांति ने शासन के दैवीय सिद्धांत का अंत कर लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धांत को मान्यता दी ।मानव अधिकारों की घोषणा ने व्यक्ति की महत्ता को प्रतिपादित किया और यह सिद्ध किया कि सार्वभौम सत्ता जनता में  निहित है तथा शासन का अधिकार जनता से आता है।

# स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व का नारा

कांति के प्रेरक तत्व -***स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व*** विश्व की राजनीतिक व्यवस्था के स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। फ्रांस में पहली बार नागरिक स्वतंत्रता का उदय हुआ ।इसका तात्पर्य था संपत्ति का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता शरीर की स्वतंत्रता तथा वाणी एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मिलना।

# स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व का नारा

क्रांति युग में फ्रांस में जो संविधान बना उसमें नागरिक स्वतंत्रता को प्रमुख स्थान दिया गया। नेपोलियन की विजयों के कारण इटली ,हॉलैंड इन आदि देशों में भी नागरिक स्वतंत्रता के सिद्धांत का प्रवेश हुआ तथा समाचार पत्रों की स्वतंत्रता स्थापित हुई।

# स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व का नारा

फ्रांसीसी क्रांति ने प्रत्येक मनुष्य को कानून के समक्ष समान मानने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया और धन पर आधारित विशेष अधिकारों को कोई मान्यता नहीं दी ।राजकीय पदों पर नियुक्ति के लिए योग्यता को आधार बनाया गया ।प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया गया। 1792 में मेरी ***वुलस्टोन क्राफ्ट*** ने पुरुषों के बराबर स्त्रियों के अधिकार की मांग की।

# स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व का नारा

भ्रातृत्व की भावना का सिद्धांत  मूलत राष्ट्रीय देश प्रेम का सिद्धांत था जिसके अंतर्गत एक देश के निवासी एक दूसरे के साथ बंधन में बंधे हुए होते हैं तथा मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं

# राष्ट्रीयता का विकास

फ्रांसीसी क्रांति ने जन-जन में राष्ट्रवाद की भावना को पैदा किया। वस्तुतः अभी तक आम जनता की भक्ति राजा के प्रति थी । फ्रांसीसी क्रांति ने राज भक्ति को देश भक्ति में परिवर्तित की कर दिया ।इतना ही नहीं फ्रांस के बाहर भी फ्रांसीसी क्रांति ने राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार किया ।जर्मनी और इटली के राज्यों का एकीकरण तथा बाल्कन राज्यों के राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्रीयता के सिद्धांत से प्रेरित थे।

# धर्मनिरपेक्षता की भावना का प्रसार

फ्रांसीसी क्रांति ने धर्म को राज्य से अलग कर धर्मनिरपेक्ष स्वरूप प्रदान किया ।अब धर्म व्यक्तिगत विश्वास की वस्तु बन गई जिसमें राज्य को किसी तरह हस्तक्षेप नहीं करना था।

# सैन्यवाद का विकास

फ्रांसीसी क्रांति ने सैन्यवाद को प्रेरित किया। वस्तुतःनागरिकों के लिए सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गई। युद्ध सेवा अनिवार्य कर दी गई ।युद्ध के लिए जनता की संपूर्ण लामबंदी के लिए यह पहली अपील थी । इसी सैन्यवाद ने आगे चलकर अनेक राष्ट्रों को प्रभावित किया।

# अधिनायकवाद की शुरुआत

फ्रांसीसी क्रांति को अधिनायकवाद का उद्गम स्रोत माना जाता है ***रोबेसपियर*** का आतंक का शासन इसका प्रमाण है । क्रांति के दौरान अनेक नीतियों और सिद्धांतों को बदलना पड़ा और वे असफल भी हुए फलस्वरूप एक व्यक्ति की योग्यता पर बल दिया जाने लगा।इसी से नेपोलियन जैसे तानाशाह का उद्भव संभव हुआ ।

# समाजवाद की नींव

फ्रांसीसी क्रांति के परिणाम स्वरुप समाजवाद का मार्ग प्रशस्त हुआ ।इतिहासकार ***क्रोपोटकिन*** के अनुसार - संपूर्ण फ्रांस की क्रांति के समय साम्यवादी विचार सामने उपस्थित रहा। कृषक दासता ,सामंतवाद का अंत, चर्च एवं सामंतों के विशेष अधिकारों की समाप्ति, समान कानून,

# समाजवाद की नींव

कर्जदार को जेल में बंदी बनाकर न रखना ,चर्च की भूमि पर किसानों का प्रभुत्व आदि कारणों से समाजवाद की पृष्ठभूमि तैयार हुई ।क्रांतिकारी अन्य देशों के पीड़ित जनता को अपना भाई समझते थे ।इस प्रकार बंधुत्व का उन्होंने नारा देकर कार्ल मार्क्स का मार्ग प्रशस्त किया।

# यूरोप में प्रतिक्रियावाद का युग

क्रांति के बाद यूरोप के शासक प्रतिक्रियावादी बन गए। नेपोलियन के पतन के पश्चात यूरोप के शासक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रत्येक निर्णय क्रांति के भय तथा फ्रांस शक्तिशाली न बने इस को ध्यान में रखकर लिया जाने लगा। 1814 ईसवी का वियना कांग्रेस इसकी पुष्टि करते हैं ।1815 से 1848 तक का यूरोप का इतिहास ***प्रतिक्रियावाद के युग*** के नाम से प्रसिद्ध है।